संधि

जखन दू अथवा दू सँ अधिक वर्णकेँ मिललासँ विकार उत्पन्न होइत अछि अर्थात् वर्णक मेलसँ विकार उत्पन्न होइत अछि आ एकटा नव वर्ण बनैत अछि, तखन एकरा व्याकरणक भाषामे संधि कहल जाइत अछि। जेना-नव+अन्न=नवान्न, जगत्+गुरु=जगद्गुरु, मन:+रथ=मनोरथ आदि।

यद्यपि मैथिलीमे संधिक उदाहरण नहिएक बरोबरि भेटैत अछि मुदा मैथिलीमे तत्सम शब्दक बेस प्रयोग होइत अछि आ तत्सम शब्दसभमे संधिक प्रमुखता अछि तेँ सन्धिक ज्ञान आवश्यक।

संधिक भेद-संधि तीन प्रकारक होइत अछि-01.स्वर संधि 02. व्यञ्जन संधि आ, 03.विसर्ग संधि।

01. **स्वर संधि**-जखन स्वर वर्णक संग स्वर वर्णक मेलसँ विकार उत्पन्न होइत अछि तखन ओकरा स्वर संधि कहल जाइत अछि। जेना-विद्या+आलय=विद्यालय, गण+ईश=गणेश, एक+एक=एकैक, यदि+अपि=यद्यपि, ने+अन=नयन।

स्वर संधि पाँच प्रकारक होइत अछि- (क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि (ग) वृद्धि संधि (घ) यण् संधि एवं (ङ)अयादि संधि।

ह्रस्व+ह्रस्व	ह्रस्व+दीर्घ	दीर्घ+ह्रस्व	दीर्घ+दीर्घ
धर्म+अर्थी=धर्मार्थी	देव+आलय=देवालय	विद्या+अध्ययन=विद्याध्ययन	विद्या+आलय=विद्यालय
गिरि+इन्द्र=गिरीन्द्र	मुनि+ईश=मुनीश	मही+इन्द्र=महीन्द्र	नदी+ईश=नदीश
भानु+उदय=भानूदय	लघु+ऊर्मि=लघूर्मि	वधू+उपस्थिति=वधूपस्थिति	वधू+ऊरू=वधूरू
पितृ+ऋण=पितृण			

(ख) **गुण संधि-एहि संधिमे** -अ' अथवा 'आ' क आगाँ -इ' अथवा 'ई' क रहला पर 'ए', 'उ' अथवा 'ऊ' क रहला पर 'ओ' आ 'ऋ' अथवा 'ॠ' क रहल' पर 'अर्' भय जाइत अछि। जेना-

अ/आ+इ/ई=ए	अ+आ+उ/ऊ=ओ	अ/आ+ऋ/ॠ=अर्
गज+इन्द्र=गजेन्द्र	चन्द्र+उदय=चन्द्रोदय	सप्त+ऋषि=सप्तर्षि
महा+ईश=महेश	महा+ऊर्मि=महोर्मि	महा+ऋषि=महर्षि
सुर+इन्द्र=सुरेन्द्र	महा+उग्र=महोग्र	अधम+ऋण=अधमर्ण
देव+इच्छा=देवेच्छा	महा+उत्तम=महोत्तम	उत्तम+ऋण=उत्तमर्ण
परम+ईश्वर=परमेश्वर		
सर्व+ईश=सर्वेश		

(ग) वृद्धि संधि-एहि संधिमे 'अ' अथवा 'आ' क आगाँ 'ए' अथवा 'ऐ' क रहला पर 'ऐ' आ 'ओ' अथवा 'औ' क रहला पर 'औ' भय जाइत अछि। जेना-

अ/आ+ए/ऐ	अ/आ+ओ/औ
एक+एक=एकैक	जल+ओघ=जलौघ
सदा+एव=सदैव	वन+औषधि=वनौषधि
तथा+एव=तथैव	कुम्हड़+औड़ी=कुम्हड़ौड़ी
मत+ऐक्य=मतैक्य	मधुर+औषध=मधुरौषध
देव+ऐश्वर्य=देवैश्वर्य	बाल+औद्धत्य=बालौद्धत्य
सदा+ऐक्य=सदैक्य	विद्या+ओघ=विद्यौघ
महा+ऐश्वर्य=महैश्वर्य	महा+औषधि=महौषधि
	महा+औदार्य=महौदार्य

(घ) यण् सन्धि-यदि इ/ई, उ/ऊ/आ/ऋ/ॠ क आगाँ कोनो भिन्न स्वर आबय तँ इ/ई क 'य्', उ/ऊ क 'व' तथा ऋ/ॠ क 'र्' भय जाइत अछि। जेना-

इ/ई+भिन्न स्वर	उ/ऊ+भिन्न स्वर	ऋ/ॠ+भिन्न स्वर
प्रति+एक=प्रत्येक	अनु+अय=अन्वय	मातृ+आदेश=मात्रादेश
अभि+उदय=अभ्युदय	सु+आगत=स्वागत	मातृ+इका=मात्रिका
यदि+अपि=यद्यपि	अनु+इत=अन्वित	मातृ+ओज=मात्रोज
नदी+अम्बु=नद्यम्बु	मनु+अन्तर=मन्वन्तर	पितृ+औदार्य=पित्रौदार्य
देवी+आगमन=देव्यागमन	मधु+आलय=मध्वालय	भातृ+एव=भ्रात्रेव
नदी+आगम=नद्यागम	अनु+एषण=अन्वेषण	नेतृ+ऐक्य=नेत्रैक्य
	भू+आदि=भ्वादि	

(ङ) आयादि संधि-एहि संधिमे 'ए', 'ऐ' 'ओ', आ, 'औ' क आगाँ कोनो भिन्न स्वर रहय तँ 'ए' क 'अय्' 'ओ' क 'अव' तथा 'औ' क आव् भय जाइत अछि। जेना-

ए+भिन्न स्वर	ऐ+भिन्न स्वर	ओ+भिन्न स्वर	औ+भिन्न स्वर
चे+अन=चयन	नै+अक=नायक	भो+अन=भवन	पौ+अक=पावक
ने+अन=नयन	गै+अक=गायक	पो+अन=पवन	भौ+उक=भावुक
से+अन=सयन	दै+अक=दायक	पो+इत्र=पवित्र	द्वौ+एवे=द्वावेव

02. व्यञ्जन संधि-व्यञ्जन वर्णक संग स्वर अथवा व्यञ्जन वर्णक मेलसँ जँ विकार उत्पन्न हो तँ व्यञ्जन संधि होइत अछि। जेना- दिक्+अम्बर=दिगम्बर, वाक्+मय=वाङ्मय, शम्+कर=शंकर, उत्+लेख=उल्लेख, तत्+रूप=तद्रूप।

नियम-01. जँ वर्गक पहिल वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) क आगाँ कोनो वर्गक तेसर अथवा चारिम वर्ण (ग्, ज्, ड्, द्, ब्, घ्, झ्, ढ्, ध्, भ्) अथवा कोनो स्वर वर्ण रहय तँ 'क्' क ग्, 'च्' क 'ज्', 'ट्' क 'ड्', त् 'क' 'द्' 'आ' 'प्' क 'ब्' भय जाइत अछि। जेना-

दिक्+भ्रान्त=दिग्भ्रान्त	अच्+अन्त=अजन्त	जगत्+आत्मा=जगदात्मा
दिक्+गज=दिग्गज	षट्+दर्शन=षड्दर्शन	कृत्+अन्त=कृदन्त
महत्+औषधि=महदौषधि	जगत्+बन्धु=जगद्बन्धु	अप्+ज=अब्ज

नियम 02. जँ वर्गक पहिल वर्ण (क्, च्, ट्, त्, प्) क आगाँ न् अथवा म् आबय तँ क्रमशः 'क्' क 'ङ' च्' क 'ञ्', 'ट्' क 'ण्', 'त्' क न् आ 'प्' 'क' 'म्' भय जाइत अछि। जेना-दिक्+नाग=दिङ्नाग, चित्+मय=चिन्मय, षट्+मार्ग=षण्मार्ग, षट्+मास=षण्मास, उत्+नति=उन्नति, जगत्+नाथ=जगन्नाथ, अप्+मय=अम्मय।

नियम 03. 'म्' क आगाँ यदि कोनो व्यञ्जन वर्ण रहय तँ 'म्' क (ं) अनुस्वार भय जाइछ, आ जँ ओ व्यञ्जन जँ कोनो वर्गक रहय तँ ओ अपन वर्गक पंचम वर्ण सेहो भय जाइत अछि। जेना-सम्+गम=संगम/सङ्गम, सम्+यम=संयम/किम्+चित्=किंचित्/किञ्चित्, अहम्+कार=अहंकार/अहङ्कार शम्+कर=शंकर/शङ्कर।

नियम 04. 'त्' क आगाँ यदि 'च्' अथवा 'छ्' आबय तँ 'त्' क 'च्', ज् अथवा 'झ्' आबय तँ 'त्' क 'ज्', 'ट्' अथवा 'ठ्' आबय तँ 'त्' क 'ट्', 'ड्' अथवा 'ढ्' आबय तँ 'त' 'ड्', 'ल्' आबय तँ क क 'त्' 'ल्', 'श्' आबय तँ 'त्' क 'च्' आ 'श्' क स्थानमे 'छ्' तथा 'ह्' आबय तँ 'ह्' क 'ध' भय जाइत अछि। जेना-सत्+चित्=सच्चित्, उत्+चारण=उच्चारण, महत्+छिद्र=महच्छिद्र, उत्+ज्वल=उज्वल, उत्+झट्=उज्झट, सत्+ठक्कुर=सट्टक्कुर, तत्+टिका=तट्टिका, उत+छिन्न=उच्छिन्न, उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट, महत्+शिला=महच्छिला, उत्+श्वास=उच्छवास, उत्+श्रृंखल=उच्छृंखल, उत्+हार=उद्धार, तत्+हित=तद्धित।

नियम 05. 'त्' क आगाँ यदि कोनो स्वर वर्ण अथवा ग्, घ्, द्, ध्, ब्, भ्, य्, र् अथवा व् रहय तँ 'त्' क 'द्' भय जाइत अछि। जेना-जगत्+आनन्द=जगदानन्द, उत्+गम=उद्गम, उत्+घाटन=उद्घाटन, उत्+दाम=उद्दाम, उत्+भव=उद्भव, उत्+योग=उद्योग, तत्+रूप=तद्रूप, वृहत्+वर्णन=वृहद्वर्णन, सत्+वंश=सद्वंश।

नियम 06. 'ऋ', 'र' अथवा 'ष' क आगाँ यदि 'न' रहय आ एहि मध्य कोनो स्वर, कवर्ग, पवर्ग अथवा 'य', 'व' अथवा ह रहय तँ 'न' क 'ण' भय जाइत अछि। जेना-भूष्+अन=भूषण, परि+नाम=परिणाम, राम+अयन=रामायण, परि+मान=परिमाण, प्र+माण=प्रमाण चान्द्र+अयन=चान्द्रायण।

नियम 07. यदि कोनो शब्दक अन्तमे 'अ' अथवा 'आ' कँ छोड़िकऽ कोनो स्वर वर्ण आ ओकरा आगाँ 'स' रहय तँ 'स' क 'ष' आ 'स्थ' रहय तँ 'ष्ठ' भय जाइत अछि। जेना-वि+सम=विषम, वि+साद=विषाद, युधि+स्थिर=युधिष्ठिर, सु+समा=सुषमा, अभि+सेक=अभिषेक, अभि+सिक्त=अभिषिक्त आदि।

03. विसर्ग संधि-विसर्ग (:) क संग स्वर अथवा व्यञ्जनक मेलसँ जँ विकार उत्पन्न होइत अदि तँ ओ भेल विसर्ग सँधि। जेना-मन:+अनुकूल=मनोऽनुकूल, मन:+हर=मनोहर, पुर:+हित=पुरोहित, नि:+कारण=निष्कारण, नि:+रव=नीरव आदि।

नियम 01. विसर्ग (:) क आगाँ 'च्' अथवा 'छ्' क रहला पर (:) विसर्गक 'श्', 'ट्' अथवा 'ठ्' क रहला पर 'ष्' आ 'त्' अथवा 'थ्' क रहलापर 'स्' भय जाइत अछि। जेना-नि:+चय=निश्चय, नि:+छल=निश्छल, धनु:+टंकार=धनुष्टंकार, हरि:+ठक्कुर=हरिष्ठक्कुर, नि:+तार=निस्तार, दु:+स्थल=दुस्थल आदि।

नियम 02. विसर्ग (:) क पूर्व इकार अथवा उकार रहय आ आगाँ क्, ख्, प्, अथवा फ् रहय तँ विसर्गक 'ष्' भय जाइत अछि। जेना-नि:+कपट=निष्कपट, दु:+कर=दुष्कर, नि:+कारण=निष्कारण, आवि:+कार=आविष्कार, चतु:+कोण=चतुष्कोण, नि:+खलन=निष्खलन, नि:+पाप=निष्पाप, नि:+प्राण=निष्प्राण, नि:+फल=निष्फल।

नियम 03. विसर्ग (:)क पहिने कोनो ह्रस्व स्वर रहय आ आगाँ 'र्' रहय तँ विसर्गक लोप भय जाइत अछि आ पूर्वक ह्रस्व स्वर दीर्घ भय जाइत अछि। जेना-नि:+रोग=नीरोग, नि:+रस=नीरस, दु:+राज=दूराज, पुन:+रमण=पुनारमण।

नियम 04. यदि विसर्ग (:) क पूर्व 'अ' अथवा 'आ' क छोड़िकऽ कोनो आन स्वर रहय आ आगाँ कोनो स्वर अथवा वर्गक तेसर, चारिम, पाँचम (ग्, ज्, ड्, द्, ब्, घ्, झ्, ड्, ध्,भ्, ङ्, ञ्, ण्, न्, म्) वर्ण (य्, र्, ल्, व् अथवा ह् आबय तँ विसर्गक 'र्' भय जाइत अछि। जेना- नि:+अर्थक=निरर्थक, नि:+आपद=निरापद, नि:+आकार=निराकार, नि:+ईश्वर=निरीश्वर, नि:+उपाय=निरूपाय, नि:+गुण=निर्गुण, नि:+जल=निर्जल, नि:+झर=निर्झर, नि:+बल=निर्बल, नि:+मल=निर्मल, नि:+विकार=निर्विकार, दु:+=बल=दुर्बल, दु:+जन=दुर्जन, दु:+गन्ध=दुर्गन्ध, बहि:+मुख=बहिर्मुख आदि।

नियम 05-यदि विसर्ग:क पूर्व 'अ' रहय आ आगाँ वर्गक तेसर, चारिम, पाँचम वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व् , ह् आबय तँ पूर्वक 'अ', आ विसर्गक 'ओ' भय जाइत अछि। जेना-उर:+ज=उरोज, मन:+ज=मनोज, सर:+ज=सरोज, यश:+दा=यशोदा, पय:+धर=पयोधर, मन:+नयन=मनोयन, मन:+भाव=मनोभाव, तप:+मय=तपोमय, मन:+योग=मनोयोग, मन:+रथ=मनोरथ, यश:+लाभ=यशोलाभ, मन:+विकार=मनोविकार, मन:+वांछित=मनोवांछित, मन:+हर=मनोहर, पुर:+हित=पुरोहित आदि।

नियम-06. यदि विसर्गक पूर्व 'अ' रहय आ आगाँ 'अ' आबय तँ पहिल 'अ' आ विसर्गक 'ओ' भय जाइत अछि आ आगाँक 'अ' क लोप भय जाइत अछि परन्तु ओकर लुप्त होयबाक चिह्न (ऽ) भय जाइत अछि। जेना-स:+अहम्=सोऽहम्, नव:+अङ्कुर=नवोङ्कुर, मन:+अभिलाषा=मनोऽभिलाषा, मन:+अनुकूल=मनोऽनुकूल।

परन्तु आगाँ वला 'अ' क स्थान पर कोनो आन स्वर आओत तँ विसर्ग क लोप भय जातइ अछि। जेना-अत:+एव=अतएव, यश:+इच्छा=यशइच्छा।

□□□

कारक

जे क्रियाक उत्पतिमे सहायक हो, ओ कारक कहबैत अछि। जेना-छात्र पुस्तक पढ़ैत अछि। एहि वाक्यमे 'पढ़ैत अछि' क्रियाक उत्पतिमे 'छात्र' आ 'पुस्तक' सहायक अछि। एहि दुनूक अभावमे 'पढ़ब' क्रिया नहि भऽ सकैत अछि। तैँ 'छात्र' आ 'पुस्तक' क ई रूप कारक कहबैत अछि।

कारकक आठ भेद होइत अछि-कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण आ सम्बोधन।

(i) कर्त्ताकारक-जे काज (क्रिया) कैँ करैत अछि से कर्त्ता कहबैत अछि। जेना-'राजू' पढ़ैत अछि। वाक्यमे 'पढ़बाक' काज (पढ़बक्रिया) कैँ 'राजू' करैत अछि। तैँ 'राजू' एहि वाक्यक कर्त्ता भेल। मैथिलीमे कर्त्ता कारकक कोनो चिह्न नहि होइत अछि।

(ii) कर्मकारक-क्रियाक फल जाहि शब्द पर पड़ैत अदि अर्थात् क्रिया कयलासँ जे शब्द प्रभावित हो ओ कर्मकारक होइत अछि। जेना-राम आम खाइत अछि। एहि वाक्यमे रामक 'खायब' क्रिया करबाक प्रभाव 'आम' पर पड़ैत अछि अर्थात् 'आमक' नोकसान होइत छै। तैँ 'आम' मे कर्मकारक भेल। एकर चेन्ह अछि-0, काँ, कैँ आ के।

(iii) करण कारक-क्रियाक सम्पादनमे कर्त्ताक जे सहायक हो अर्थात् क्रिया सम्पादनक साधन हो ओ करणकारक होइत अछि। दोसर शब्दमे कर्त्ता जाहि साधनसँ क्रिया करय से करणकारक होइत अछि। जेना-शिक्षक चाँकसँ श्यामपट पर लिखैत छथि। एह वाक्यमे शिक्षक (कर्त्ता) क लिखबाक साधन छनि 'चाँक'। ओ चाँकसँ लिखैत छथि। तैँ चाँकमे करण कारक अछि। करणकारकक चेन्ह अछि-सँ।

(iv) सम्प्रदान कारक-जाहि हेतु क्रिया कयल जाइत अछि से सम्प्रदान कारक होइत अछि। जेना-सोहन मोहनक लेल मोदक आनलक अछि। एहि वाक्यमे 'सोहन' मोदक आनबाक क्रिया 'मोहनक' लेल करैत अछि। तैँ 'मोहन' सम्प्रदान कारक भेल। एकर चेन्ह अछि-कैँ, लेल, हेतु आदि।

(v) अपादान कारक-जाहि शब्दसँ अलगाब अर्थात् अलग होयबाक बोध हो से अपादान कारक होइत अछि। जेना-गाछसँ पात खसैत अछि। एहि वाक्यमे 'गाछसँ' पात अलग भऽ रहल अछि। तैँ ई 'गाछ' भेल अपादान कारक। एकर चेन्ह अछि-सँ।

(vi) सम्बन्ध कारक-जाहि शब्दसँ कर्त्ता अथवा आन कोनो कारकक सम्बन्धक बोध हो से सम्बन्ध कारक होइत अछि। जेना-जनक मिथिलाक राजा छलाह। एहि वाक्यमे 'मिथिलासँ' जनकक सम्बन्धक बोध होइत अछि। तैँ मिथिला भेल सम्बन्ध कारक। एकर चेन्ह अछि-क आ केर।

(vii) अधिकरण कारक-जे शब्द क्रियाक आधार रहैत अछि ओ अधिकरण कारक होइत अछि। जेना-छात्र विद्यालयमे पढ़ैत अछि। एहि वाक्यमे 'पढ़ैत अछि' क्रियाक होयबाक आधार अछि-विद्यालय, तेँ विद्यालय अधिकरण कारक भेल। एकर चेन्ह अछि-मे आ पर।

(viii) सम्बोधन कारक-जाहि शब्दकेँ क्रियाक सम्पादन हेतु सम्बोधित कयल जाइत अछि से सम्बोधन कारक होइत अछि। जेना- हे छात्र! अहाँ मोनसँ पढ़ू। एतय 'पढ़ब' क्रियाक सम्पादन हेतु 'छात्रकेँ' सम्बोधित कयल जाइत अछि। तेँ 'छात्र' भेल सम्बोधन कारक। एकर चेन्ह अछि-हे, हो, अरे, रे, रौ, हओ, हरौ, रओ आदि।

क्रिया

जाहि शब्दसँ कोनो कार्य अथवा व्यापारक होयब अथवा करब आदिक बोध होइत अछि से क्रिया कहबैत अछि। जेना-राम पढ़ैछ, श्याम गीत सुनैछ, गीता गीत गबैछ, मोहन दौड़ैछ। एतय 'पढ़ैछ', 'सुनैछ', 'गबैछ', आ 'दौड़ैछ' शब्दसँ क्रमशः पढ़ैछसँ पढ़बाक, सुनैछसँ सुनबाक आ गबैछसँ गैबाक कार्यक बोध होइत अछि तँ ई सभ क्रिया अछि।

क्रियाक मुख्य दू भेद अछि-सकर्मक आ अकर्मक।

01. सकर्मक क्रिया-जाहि क्रियाक फल कर्त्तापर नहि पड़ि आन कोनो संज्ञापर पड़य से सकर्मक क्रिया होइत अछि। जेना-बटुक पत्र लिखलनि। एहि वाक्यमे' लिखलनि' क्रियाक फल कर्त्ता बटुक पर नहि पड़ि 'पत्र' पर पड़ैत अछि तँ ई सकर्मक क्रिया भेल।

02. अकर्मक क्रिया-जाहि क्रियाक फल कर्त्तापर पड़य से अकर्मक क्रिया होइत अछि। जेना-सोहन हँसैछ, राधा नचैछ, हर्ष अबैछ। एतय-'हँसैछ' 'नचैछ' आ 'अबैछ' क्रियाक फल क्रमशः कर्त्ता सोहन, राधा आ हर्ष पर पड़ैत अछि तँ ई सभ भेल अकर्मक क्रिया।

क्रियाक विशेष भेद-क्रियाक सातटा विशेष भेद अछि :-

(i) विधि क्रिया-जाहि क्रियासँ 'आज्ञा' अथवा 'विनयक' बोध हो, से विधि क्रिया होइत अछि। जेना-बैसू, आयल जाउ, आउ।

(ii) कामनात्मक क्रिया-जाहि शब्दसँ कहनिहारक मनोकामना प्रकट हो, से कामनात्मक क्रिया होइत अछि। जेना-ओ शीघ्र स्वस्थ होथु, कुशल रहथि, दीर्घायु होउ।

(iii) प्रेरणार्थक क्रिया-जाहि क्रियासँ एक व्यक्ति दोसरकेँ कार्य करबाक हेतु प्रेरित करैत अछि से प्रेरणार्थक क्रिया होइत अछि। जेना-शिक्षक छात्रसँ पाठ पढ़बा रहल छथि। मालिक नौकरसँ पानि भरबा रहल छथि। एतय 'पढ़बा रहल छथि, 'भरबा रहल छथि।' प्रेरणार्थक क्रिया अछि।

(iv) पूर्वकालिक क्रिया-जँ एक वाक्यमे दू क्रियाक बोध हो, तँ पहिल क्रिया पूर्वकालिक क्रिया कहबैत अछि। जेना-राजु खाकऽ पढ़ैत अछि। एतय राजु पहिने खयलक अछि तकर बाद पढ़ब आरंभ कयल अछि। तँ एहि वाक्यमे पहिल क्रिया 'खायब' पूर्वकालिक क्रिया भेल।

(v) संयुक्त क्रिया-जँ दू अथवा दू सँ बेसी क्रिया मिलिकऽ वाक्यमे एकहि अर्थक बोध करबैत अछि तँ ओ संयुक्त क्रिया कहबैत अछि। जेना-ओतहि अहाँ पोथी पढ़ि लेब। ओ घर चलि गेलाह। एतय 'पढ़ि लेब' आ 'चलि गेल' संयुक्त क्रिया थीक।

(vi) सहायिका क्रिया-जे क्रियाक व्यापारमे आन क्रियाक सहायता करय से 'सहायिका क्रिया' होइत अछि। जेना-पंडित जी कथा कहि रहल छथि। हम लेख लिखैत छी। एतय 'छथि' आ ''छी' क्रिया क्रमशः कहब आ 'लिखब' क्रियाक व्यापारमे सहायक अछि तेँ ई सहायिका क्रिया भेल।

(vii) नामधातु-नाम अर्थात् संज्ञा अथवा विशेषणसँ 'आएब' अथवा 'एब' प्रत्यम लगाकऽ जे धातु (क्रियाक मूल रूप) बनैत अछि से नामधातु होइत अछि। जेना-रामू पोथी हथिया लेलाह। गोनू गायकेँ एकहि ठाम खूटेसने अछि। एतय-'हथियाब' आ 'खूटेसने' छथि नाम धातु अछि।

प्रयोगक दृष्टिसँ क्रिया दू प्रकार होइत अछि-मुख्य क्रिया आ गौण क्रिया।

(क) मुख्य क्रिया-जे क्रिया व्यापारक बोध कराबय से मुख्य क्रिया होइत अछि। जेना-छात्रलोकनि अपन पाठ पढ़ैत छलाहँ। एतय 'पढ़ैत' क्रिया पढ़ब रूप व्यापारंक बोध करबैत अछि तेँ ई मुख्य क्रिया भेल।

(ख) गौण क्रिया-जे क्रिया वाक्यक मुख्य क्रियाक व्यापारक अर्थकेँ स्पष्ट करयसे गौण क्रिया कहबैत अछि। एहि क्रियासँ मात्र भूत, भविष्य आ वर्तमानक बोध होइत अछि। जेना-श्याम गीत गाबि रहल अछि। मोहन रटैत छलाह। 'रहल छथि' आ 'छलाह' गौण क्रिया अछि।

□□□

काल

काल-क्रियाक सम्पादन (करबा) मे जे समय लगैत अछि, ओकरा 'काल' कहल जाइत छै। जेना-सुमन विद्यालय गेल; सौरभ पढ़ैत अछि; श्याम काल्हि आओत। एतय 'गेल', 'पढ़ैत अछि; आ 'आओत' क्रियासँ क्रमश: बीतल, वर्त्तमान आ आबयबला समयमे क्रियाक होएबाक सूचना भेटैत अछि। इएह समय थीक-काल। एतय तीनू क्रियाक सम्पादनक तीन समय अछि। ई तीन कालक बोधक अछि। सभ क्रिया इएह तीन कालमे होइत अछि।

कालक भेद-कालक तीन भेद अछि-भूत, वर्त्तमान आ भविष्य।

01. भूतकाल-जँ क्रिया सम्पादनक समय बीत गेल रहैत अछि तँ ओ क्रिया भूत कालक होइत अछि। जेना-मनोज पोथी पढ़लाह। एतय 'पढ़लाह' क्रियासँ बोध होइत अछि जे मनोजक पढ़बाक क्रिया समाप्त भऽ गेल छनि आ ओकर समय बीत गेल छै। तँ एतय 'पढ़ब' क्रिया भूत कालक भेल।

भूतकालक चारि उपभेद अछि-(i) सामान्यभूत (ii) अपूर्ण भूत (iii) पूर्णभूत (iv) तात्कालिक भूत

(i) सामान्य भूतकाल-श्याम गेलाह/मोहन पढ़लाह/हम खयलहुँ आदि।

(ii) अपूर्ण भूतकाल-राजू पढ़ैत छलाह। गजेन्द्र पानि पिबैत छलाह।

(iii) पूर्ण भूत काल-गोनू स्कूल गेल छल। सोनू चल गेल छल आदि।

(iv) तात्कालिक भूतकाल-पंडित जी पतड़ा बाँचि रहल छलाह। राम हँसैत छल। अहाँ गाम जाइत छलहुँ/हम सुतल छलहुँ/राम हँसैत छल आदि।

02. वर्त्तमान काल-जँ क्रिया सम्पादन (करबाक) क समय उपस्थित (वर्त्तमान) रहैत अछि तँ ओ भेल-वर्त्तमान काल। जेना-गीता गीत गाबैत अछि। हम विद्यालय जाइत छी। तोँ हँसैत छें आदि।

वर्त्तमान कालक चारिटा उपभेद होइत अछि-

(i) सामान्य वर्त्तमानकाल-हम पढ़ै छी। तोँ जाइत छह। ओ कहैत छथि। श्याम गीत सुनैत अछि। सीता हँसैत अछि आदि।

(ii) अपूर्ण वर्त्तमानकाल- हम पढ़ि रहल छी। ओ खा रहल छथि।

(iii) पूर्ण वर्त्तमानकाल- हम ई पोथी पढ़ि गेल छी। तोँ पानि पिबि लेने छह। रमेश आबि चुकल अछि।। दिनेश चलि गेल अछि।

(iv) तात्कालिक वर्त्तमान-नरेश स्नान करैत अछि। महेश घरसँ चलैत अछि।

03. भविष्यत् काल-जँ क्रिया सम्पादनक समय अयनिहार समय हो, तँ क्रियाक समय भविष्यत् काल कहबैत अछि। जेना-धनेश मेला जइताह। हम सब कथा सुनब। तोँ पढ़बह आदि।

(i) सामान्य भविष्यत् काल- सीता सीनेमा देखतीह। हमसब गाम जायब। रीता पढ़त, अन्नु बाजार जायत।

(ii) अपूर्ण भविष्यत् काल-रमेश जाइत रहत। उमेश खाइत रहत। हर्ष सुनैत रहत। मधु गाबैत रहत।

(iii) पूर्ण भविष्यत् काल-मोनू खयने रहत। धर्मेन्द्र गाम चलि गेल रहत। रानी पोथी पढ़ि गेल रहत।

□□□

समास

दू वा दूसँ अधिक पदकेँ अपन-अपन विभक्तिकेँ छोड़िकऽ आपसमे मिलब अर्थात् एक पद बनि जायब समास थीक आ बनल शब्द समस्त पद कहबैत अछि। जेना-राजेन्द्र, गंगाजल, विद्यापति, त्रिवेणी, अनाथ, दहीचूड़ाचीनी, तुलसीचौड़ा, नीलोत्पल, पीताम्बर आदि।

समस्त पदकेँ अलग-अलग करब विग्रह कहबैत अछि। जेना-राजासभक इन्द्र, गंगाक जल, विद्याक पति, नहि नाथ, दही, चूड़ा आ चीनी, तुलसीक चौड़ा, नील उत्पल, पीत छनि अम्बर जनिक अर्थात् विष्णु आदि।

समासक भेद-समासक मुख्य भेद सात अछि-

1. अव्ययीभाव, 2. तत्पुरुष, 3. कर्मधारय, 4. द्विगु, 5. द्वन्द्व, 6. बहुब्रीहि आ 7. नञ्।

01. अव्ययीभाव समास-जाहि समस्तपदक पहिल पद अव्यय रहैत अछि आ ओकरे अर्थक प्रधानता रहैत अछि तँ ओ अव्ययीभाव समास होइत अछि। एहि समस्तपदक प्रयोग अव्यये सदृश होइत अछि। जेना- यथार्थ, अर्थक अनुसार, यथाशक्ति-शक्तिक अनुसार, दुर्भिक्ष-भिक्षाक अभाव, निर्विघ्न-निर्विघ्न अभाव, आसमुद्र-समुद्र पर्यन्त, अनुक्रम-क्रमक पश्चात्, अनुग्रह-ग्रहक पश्चात्, उपग्रह-ग्रहक समीप, उपमंत्री-मंत्रीक समीप, अनुरूप-रूपक योग्य, प्रतिदिन-दिन-दिन, बारंबार-बेर-बेर।

02. तत्पुरुष समास-जाहि समस्त पदक उत्तर पद (अन्तिमपद), प्रधान रहैत अछि ओ तत्पुरुष समास होइत अछि। जेना-पनिबट-पानिक बाट, पाठशाला-पाठक हेतु शाला, पॉकेटमार-पॉकेटकेँ मारऽबला, युधिष्ठिर-युद्धमे स्थिर आदि।

तत्पुरुष समासक छः उपभेद होइत अछि-(i) द्वितीया (ii) तृतीया (iii) चतुर्थी (iv) पञ्चमी (v) षष्ठी (vi) सप्तमी

(i) **द्वितीया (कर्म) तत्पुरुष-गोपाल**-गायकेँ पालनिहार, भिखमंगा-भिख माँगनिहार, आँखिफोरबा-आँखिकेँ फोरनिहार आदि।

(ii) तृतीया (करण) तत्पुरुष- कष्टसाध्य-कष्टसँ साध्य, मदमत्त-मदसँ मत्त (मातल), शोकाकुल-शोकसँ आकुल, बाणविद्ध-बाणसँ बिद्ध आदि।

(iii) चतुर्थी (सम्प्रदान) तत्पुरुष-तपोवन-तपक लेल बन, बटखर्चा-बाटक लेल खर्चा, हथकड़ी-हाथक लेल कड़ी, पैजेब-पैरक लेल जेबर।

(iv) पञ्चमी (अपादान) तत्पुरुष- ऋणमुक्त-ऋणसँ मुक्त, गुणहीन-गुणसँ हीन,धर्मच्युत-धर्मसँ च्युत, जातिभ्रष्ट-जातिसँ भ्रष्ट आदि।

(v) षष्ठी (सम्बन्ध) तत्पुरुष-बेलपत्र-बेलक पत्र (पात), मनोयोग-मनक योग, सुधासिन्धु-सुधाक सिन्धु, मृगराज-मृगक राजा आदि।

(vi) सप्तमी (अधिकरण) तत्पुरुष-घरघुस्सा-घरमे घुसय बला, घरपैसा-घरमे पैसयबला, दानवीर-दानकरयमे वीर, कर्मवीर-कर्म करयमे वीर आदि।

03. कर्मधारय समास- जाहि समस्त पदक पहिल विशेषण आ उत्तरपद विशेष्य (उपमा उपमेय) हो ओ कर्मधारय समास होइत अछि। जेना-कमलनयन-कमल सदृश नयन, नीलकमल-नीला कमल, मुखकमल-कमलक समान मुख, व्याघ्र पुरूष-व्याघ्र सदृश पुरुष, चरणकमल-चरणरूपी कमल आदि।

04. द्विगु समास-जाहि समस्तपदक पहिल पद संख्यावाचक रहैत अछि ओ द्विगु समास होइत अछि। जेना-त्रिलोकी-तीन लोकक समूह, त्रिभुवन-तीन भुवनक समूह, पंचबटी-पाँच बाटक समूह, चतुर्भुज-चारि भुजाक समूह, षट्कोण-षट् (छः) कोणक समूह, त्रिनेत्र-तीन नेत्रक समूह।

05. द्वन्द्व समास-जाहि समस्त पदक दुनू पद प्रधान होइत अछि ओ द्वन्द्व समास होइत अछि। जेना-दालिभात-दालि आ भात, पोथीपतड़ा-पोथी आ पतड़ा, लोटाडोरी-लोटा आ डोरी, हाथीघोड़ा-हाथी आ घोड़ा, सीताराम-सीता आ राम, पाणिपाद-पाणि आ पाद आदि।

06. बहुब्रीहि समास-जाहि समस्तपदक कोनो खण्डक अर्थक प्रधानता नहि भऽ अन्य (तेसर) अर्थक प्रधानता हो से बहुब्रीहि समास होइत अछि। जेना-हथटुट्टा-हाथ टूटल हो जकर से, एकमुहा-एक मुह छै जाहि घरक से, कनकट्टा-कान कटल छै जकर से, लम्बोदर-लम्बा छनि उदर जनिकर ओ (गणेश), पञ्चानन-पाँच आनन छनि जनिका ओ (शिव जी), दशमुख-दशमुख छनि जिनका से (रावण), षडानन्न-षट् आनन छनि जिनका ओ (कार्तिकेय) आदि।

07. नञ् समास-जाहि समस्तपदक पहिल पद नकारात्मक रहैत अछि, ओ नञ् समास होइत अछि। जेना-अनेक न-एक, अद्वितीय-न द्वितीय, अजुबा- न जुबा, अनचिन्हार-नहि चिन्हार, अनहोनी-नहि होनी, अयोग्य-न योग्य, अदृश्य-न दृश्य, अनजान-नहि जानल आदि।

□□□

मुहावरा

मुहावरा ओ वाक्यांश अछि जे अपन सामान्य अर्थकेँ छोड़ि कोनहु विशेष अर्थक बोध करबैत अछि। एकरा वाग्धारा सेहो कहल जाइत अछि। जेना-पानि-पानि होयब, पाला पड़ब आदि।

एकर प्रयोगसँ भाषा रोचक, ललित, प्रौढ़ आ परिमार्जित होइत अछि। मुहावरा असंख्य अछि। व्यवहारमे अयनिहार मुख्य मुहावरा आगाँ देल जा रहल अछि।

1. **अगिया बेताल** (साहसी)-काज करबामे गणेश अगिया बेताल अछि।
2. **अटकलबाजी** (अन्दाज)-परीक्षामे अटकलबाजीसँ काज नहि चलै छै।
3. **अड्डा जमायब** (जमा होयब)-चोर पायाक काते कात अड्डा जमा लेलक।
4. **अपन सन मुह होयब** (लजायब)-परीक्षामे असफल भेलापर छात्रकेँ अपनासन मुह भऽ गेलनि।
5. **आकाश पताल एक करब** (कठिन परिश्रम करब)-परीक्षामे सफलताक लेल रामू आकाश पताल एक कऽ देलक।
6. **अन्हेर नगरी** (न्याय शून्य स्थान)-ई गाम अन्हेर नगरी भऽ गेल अछि।
7. **औंठा देखायब** (मोका पर धोखा देब)-सुमनसँ बचिकऽ रहु ओ औंठा देखायब खूब जनैत अछि।
8. **आंगुर उठायब** (बदनाम करब)- आइ राजनेता पर केओ आंगुर उठा दैत अछि।
9. **करेज फाटब** (ईर्ष्या होयब)-श्याम मोटर की किनलक ओकरा पड़ोसी सभक करेजा फाटऽ लगलै।
10. **पाँचो आंगुर घीमे होयब** (लाभमे रहब)-एखन ठीकेदार सभक पाँचो आंगुर घीमे अछि।
11. **करेजा पर साँप लोटब** (दोसरक उन्नति देखि कऽ जरब)- रामक राज्याभिषेकक खबरि सुनि मंथराक करेजापर साँप लोटऽ लगलै।
12. **करेजापर पाथर राखब** (दिल मजगूत करब)-विभीषणक विमुखता पर रावण अपना करेजापर पाथर राखि लेलनि।
13. **कान काटब** (मात करब)-कर्पूरी ठाकुर आँकड़ा प्रस्तुत करबामे सभक कान काटैत छलाह।

14. **कान फूकब** (बहकायब)-मंथरा कैकेयीकेँ कान फुकि देने छलीह।

15. **गरा लगायब** (प्रेम करब)-हम सभ जाति-पाति बिसरिकऽ सभकेँ गरा लगाबि एहीमे सभक भल' अछि।

16. **चेहरा पर हवाइ उड़ब** (घबरायब)-पुलिसकेँ देखि चोरक चेहरा पर हवाइ उड़ि गेलै।

17. **जान पर खेलब** (वीरताक परिचय देब)-कारगिल युद्धमे भारतीय जबान जान पर खेलकऽ भारतक लाज बचौलक।

18. **लोहा लेब** (मुकावला करब)- कर्णसँ केओ लोहा लेबऽ नहि चाहैत छलै।

19. **आँखिमे पानि नहि रहब** (लाज नहि होयब)-कृतध्नक आँखिमे पानि नहि रहैत छै।

20. **कान ऐंठब** (गलत नहि करबाक प्रतीज्ञा करब)-आब हम कान ऐंठैत छी जे कहियो एहन काज फेर करी।

21. **दाँत निपोरब** (गिड़गिड़ायब)-राजू दाँत निपोरऽ लागल तऽ दस टाका दऽ देलियै।

22. **अपनहि पयरमे कुरहड़ि मारब** (अपन अपकार करब) राम बाप पर मुकदमका कऽ अपनहि पयरमे कुरहड़ि मारलक।

23. **अरण्य रोदन करब** (व्यर्थ कानब) आइ-काल्हि प्राय: अधिकारीक आगाँ अपंन फरियाद करब अरण्य रोदन सिद्ध होइत अछि।

24. **अस्सी मोन पानि पड़ब** (हतोत्साहित होयब) परीक्षाक नाम सुनितहि गोनू पर अस्सी मोन पानि पड़ि जाइत छै।

25. **अंत पायब** (थाह पायब) ईश्वरक अंत पायब सर्वथा असंभव अछि।

26. **आँचर पसारब** (भीख माँगब) प्राय: सभ माय अपन पुत्रक कल्याण हेतु भगवतीक आगाँ आँचर पसारैत अछि।

27. **आगि होयब** (क्रुद्ध होयब) विदुरक नीतिपूर्ण वचन सुनि दुर्योधन आगि भऽ जाइत छल।

28. **आगिमे घी ढारब** (क्रोध बढ़ायब) राम परशुरामक सम्वादमे लक्ष्मणक व्यंगपूर्ण बात आगिमे घी ढारि दैत छल।

46. **गोबर गणेश** (मंदबुद्धि) गोनू महागोबर गणेश अछि।

44. **चर्खी औंटब** (व्यर्थ बाजब) चानो दाइ भरि दिन चर्खी औंटैत रहेत छथि।

45. **चानीक जूता** (घूसक राशि) जँ अनुचित लाभ उठयबाक हो तँ अधिकारीकेँ चानीक जूतासँ पूजा करू।

46. **चारूनाल चीत करब** (पराजित होयब) सोनु मोनुकेँ चारू नाल चित कऽ देलक।

47. **चुल्हाक भाँड़मे जायब** (नष्ट होयब) छविनाथक धन चुल्हाक भाँड़मे जानि ओहिसँ हमरा की?

48. **टाँग अड़ायब** (बाधा देब) मूलचन कोनो सामाजिक काजमे अनेरहुँ टाँग अड़ा दैत छथि।

49. **टाँग मोड़ब** (विश्राम करब) संजय! कनि टाँग मोड़ि लेह आ घर चलि जइहेँ।

50. **ढोल पीटब** (प्रचार करब). आइ काल्हि सभ पार्टी बला अपन-अपन प्रशंसा में ढोल पीटि रहल अछि।

51. **दुतियाक चान** (बहुत दिनपर दर्शन देब) कमलाकान्त आइकाल्हि दुतियाक चान भऽ गेलछथि।

□□□

लोकोक्ति

लोकक उक्ति (कहब) कैं लोकोक्ति कहल जाइत अछि। लोक माने आम (सर्वसाधारण) लोक। आमलोकक जे उक्ति कालक विभिन्न खण्डक विभिन्न परिस्थितिमे अपन अर्थक सार्थकता सिद्ध करैत लोकक द्वारा अपन वाक्व्यवहारमे प्रस्तुत होइत आबि रहल अछि से उक्ति भेल-'लोकोक्ति'। लोकोक्तिक अर्थक सार्थकताक ई चमत्कार अछि जे ई युग-युगसँ मात्र लोकेवाणीमे प्रयुक्त नहि होइत अछि, अपितु एकर प्रयोग साहित्योमे अर्थ गाम्भीर्य, भाषाक सौंदर्य आ विशेष अर्थक द्योतन हेतु होइत आबि रहल अछि। एकर एकहु शब्दकैं बदलल अथवा एमहरसँ ओमहर नहि कयल जा सकैत अछि। एकर संख्या असंख्य अछि। प्रतिदिन लोक जीवनमे प्रयुक्त किछु मुख्य लोकोक्तिकैं नीचाँ देल जा रहल अछि।

1. **अकुलिनि बिआही, कुलक उपहास।** (सामर्थ्यक प्रतिकूल हीन काज करब) राम अहिल्याक लग जाय हुनक उद्धारक अकुलिनि बिआही, कुलक उपहासक काज कयलनि।

2. **अघायल बगुलाक पोठी तीत** (पेट भरला पर रसगुल्ला तीत) धनिकक लेल अनुदान भेटब अघायल बगुलाक पोठी तीत होइत अछि।

3. **अनेर गायक राम रखबार** (जकर केओ नहि रक्षक तकर राम रक्षक) कुम्हारक आबामे बिलाड़ीक बच्चाक जीवित बचब अनेर गायक राम रखबार भेल।

4. **अपन बेदन ताहि निवेदिए जे पर बेदन जान** (अपन दु:ख ओकरे कहब जे दोसरक दु:ख बुझय) भगिरथ महाकंजूस मनोहरक आगाँ सहयोगक याचना कयलनि। हुनका ई बुझले नहि छलनि जे अपन वेदन ताहि निवेदिए जे पर वेदन जान।

5. **अन्हरामे कन्हा राजा** (मूर्खक मध्य कमो ज्ञानीकैं अपनाकैं महाज्ञानी बूझब) अपना गाममे रामायणक दू-चारि पाँति रटि श्यामू अन्हरामे कन्हा राजा बनि लेल अछि।

6. **अन्हेर नगरी चौपट राजा टके सेर खाजा टके सेर भाजी** (मूर्ख समाजमे नीक बेजाय एक समान) मूर्ख आ पंडितक संग एके व्यवहार होइत देखि ई कहबी मोन पड़ल-अन्हेर नगरी चौपट राजा टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

7. **अपन करनी पार उतरनी** (अपन कर्मक बलें सफल वा असफल होयब) भरि साल कहियो रंजन पढ़लनि नहि परीक्षामे बैसि गेला फेल भेलाह तँ मोन पड़लनि अपने करनी पर पार उतरनी।

8. **अपन दही केओ कहै खट्टा** (अपना चीजकेँ केओ अधलाह नहि कहैछ) रामूक शर्ट नीक नहि छलै तैयो ओहि शर्टक बड़ाइ छटने छल, ई सुनि श्यामू बाजल हँ हौ अपन दही केओ कहै खट्टा।

9. **अपन खुट्टापर कुकुरो बली** (अपना घरमे दुर्बलो व्यक्ति बलबान रहैत अछि) दस गोटे रधबाकेँ मारबाक हेतु ओकरा घर पहुँचला मुदा ओ तेहन ने रूप धयलक जे सभ पड़ेलाह, तखन हुनका सभके बुझेलनि जे अपन खुट्टा पर कुकुरो बली होइछ।

10. **अपने नीक तऽ आनो नीक** (नीक व्यक्तिक लेल सभ नीक) उपकारी संजूक लेल केओ अपकारी नहि। ठीके कहबी छै-अपने नीक तऽ आनो नीक।

11. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू** (आत्म श्लाघा) अधिकांश लोक अपने मुँह मियाँ मिट्ठु होइत छथि।

12. **अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप** (मूल धनक नाश होइत देखैत रहब मुदा निस्सार वस्तुक लेल अनघोल करब) रमेशक धन गमना तरे-तर शून्य कऽ देलक मुदा ओहिपर ककरो ध्यान नहि पड़लनि लेकिन हुनकर मुट्ठी भरि पोआर लैत देखि बुधनाकेँ ओकरा सभमिलि हाथ-पैर तोड़ि देलकै एहिपर मन पड़ल ठीक कहबी छै अशर्फीक लूटि आ कोइलापर छाप।

13. **आलसी लेखेँ गंगा बड़ी दूर** (काम नहि कयनिहारक बहाना बनायब) रजुआ कहलकै भजुआकेँ कनी कलसँ ठंडा पानि ला तँ भजुआ बाजल-हम बड़ थाकल छी रमुआकेँ कह आनि देतऽ) एहिपर रजुआ कहलक-ठीके कहै छै-आलसी लेखे गंगा बड़ी दूर।

14. **आइमाईकेँ ठोप नहि बिलाड़िकेँ भरि माँग** (आदरक पात्रकेँ आदर नहि जनसामान्यकेँ परमादर) झाजीक ओतय उपनयनमे अभ्यागत लोकनिक कोनो पूछ नहि आ गामक लगुआ-भगुआ सभकेँ पुछि-पुछिकऽ खोआओल जाइत देखि विसुन बाजल आइमाइकेँ ठोप नहि बिलाड़िकेँ भरि माँग।

15. **आयल पानि गेल पानि बाटहि बिलायल पानि** (गुड़क नफा चुटिए खाय) कमल कलकत्तामे कमयलनि कम नहि मुदा संयोगलनि नहि मेंटेनेन्सेमे सभ गमा देलनि। गाम अयलापर पिताजी पुछलथिन कतेक टका कमाकऽ आनलह अछि तँ ओ बाजलनि कहाँ किछु? खर्चे बड़ छलै एहि उत्तर पर हुनक पिता कहलखिन-हँ, हौ! ई कहब कोनो फुसि छै-आयलपानि गेल पानि बाटहि बिलायल पानि।

16. **आगू नाथ न पाछू पगहा** (आगाँ-पाछाँ क्यो ने होएब)-बापक मरलाक बाद रामू एकदम एसकर भऽ गेल, आगू नाथ न पाछू पगहा।

17. **आधा तीतर आधा बटेर** (मिलल-जुलल)-राम कका ओतुक्का भोजमे माछ-मांसु दुनू रहैक। आधा तीतर आधा बटेर।

18. **आब पछतओने होएत की, जखन चिड़ै चुनलक खेत** (नुकसान भऽ गेलाक बाद सचेत हएब) नेना तँ मरि गेल, आब पछताओने होएत की, जखन चिड़ै चुनलक खेत।

19. **आम खयबासँ काज, की आँठी गनलासँ** (काजसँ मतलब राखब)-अनेरे विवाद करै जाइ छी, आम खयबासँ काज अछि, की आँठी गनलासँ।

20. **आसा भंग दुख, मरन समान** (आशाक भंगक दुख मृत्यु समान होइत छैक)-रमनकेँ डॉक्टर साहेब भरोस देने छलथिन, से पूर नहि भेलैक। आशा भंग दुख, मरन समान।

21. **ई गुड़ खयने, कान छेदैने** (विपरीतो स्थितिमे अवश्य करणीय काज)सांसारिक लोककेँ शादी विवाहक मामलामे ई गुड़ खयने कान छेदौनहिक पड़ि होइ छै।

22. **बिखेँ नाङरि कटाबी तऽ छौ मास व्यथे मरी** (तामसमे किछु अनुचित कऽ बैसब जकर कष्टसँ पीड़ित रहब) मोहन भाइक विवादमे अपन नीक गाय बेचि बिखेँ नाङरि कटाबी तऽ छौ मास व्यथे मरीक पड़िमे पड़लाह।

23. **उखरिमे मुड़ी देल तऽ मुसरक कोन डर** (भरिगर काजमे होमयबला हरानीसँ नहि घबरायब)-कन्यादानमे बड़ खर्चामे पड़ि गेलहुँ, मुदा उखरिमे मुड़ी देल तऽ मुसरक कोन डर।

24. **उनटे चोर कोतवालकेँ डाँटे** (गलती कऽ कऽ सीना जोड़ी करब)-पाकिस्तान बेर-बेर उनटे चोर कोतवालकेँ डाँटबाक काज भारत संग करैत अछि।

25. **ऊँटक मुँहमे जीराक फोरन** (थोड़ मात्रामे)-कमलनाथ बाबूक श्राद्धमे माछ-मांसु ऊँटक मुँहमे जीरक फोरन छल।

26. **एक तऽ चोरी, ऊपरसँ सीना जोरी** (बलधिंगरो करब)-कन्यागत ओतेक देलक तैयो तंग करिते छिऐक, एक तऽ चोरी, ऊपरसँ सीना जोरी।

27. **एक विदेशी दोसर तोतराह** (दुरूह काजक लेले अकुशल काज कयनिहारक भेटब)-रामू कम्प्यूटर ठीक करबाक लेल एक विदेशी दोसर तोतराहक सदृश अछि।

28. **एक म्यानमे दू तरुआरि** (एकठाम दू दबंग लोकक हएब)-सासु-पुतोहु दुनूकेँ एकठाम रहब एक म्यानमे दू तरुआरि सदृश अछि।

29. **एक हाथे थपड़ी नहि बजैछ** (एसकर कोनो काज नहि होइछ)-गाममे सभकेँ मिला कऽ राखू, एक हाथे थपड़ी नहि बजैत छैक।

30. **एक हाथक ककड़ी नौ हाथक बीआ** (चिड़ैसँ चिड़ैक बच्चे उड़ाँत)-हुमायूँक लेल अकबर एक हाथक ककड़ी नौ हाथक बीआ सिद्ध भेल।

31. **ओझा लेखे गाम बताह, गाम लेखे ओझा बताह** (एक-दोसरक गपकेँ परस्पर बुझबामे असमर्थ होयब)-गाममे अंग्रेजिया बाबूकेँ ओझा लेखे गाम बताह, गाम लेखे ओझा बताह बुझाइत छलनि।

32. **कतए राजा भोज कतए भोजुआ तेली** (कोनो तुलने नहि)-राम आ श्याममे राजा भोज आ भोजुआ तेली बला संबंध छलैक।

33. **कानी गायक भिन्ने बथान** (समूहसँ भिन्न विचारक लोक)-सभ रानीक मध्य कैकेयीक विचार कानी गायक भिन्ने बथान सदृश छल।

34. **कारी अक्षर भैंस बराबरि** (निरक्षर)-स्कूल गेलासँ की हयत, अहाँ तँ कारी अक्षर भैंस बराबर छी।

35. **कानऽ क मोन तऽ, आँखिमे गरल खूट्टी** (बहाना करब)-काज करबाक अछि तँ करू, अनेरे कानऽक मोन भेल तँ आँखिमे गरल खुट्टी बला बात नहि करू।

36. **कुकुरकेँ कतौ घी पचल** (नीक चीज नीक नहि लागब)-आजुक विपक्षी दलकेँ सरकारक नीको काज कुकुरक घी पचल सदृश होइत अछि।

37. **बिलाड़िक भागे सीक टूटल** (एकाएक अप्रत्याशित लाभ होयब)-मिथिलामे बाढ़ि अयला पर राहत वितरणमे अधिकारी सभक लेल बिलाड़िक भागे सीक टूटब होइत अछि।

38. **काँच बाँसक मुंगरी** (वास्तविकताक अभाव)-भारतक समक्ष पाकिस्तान काँच बाँसक मुंगरी अछि मुदा ओ बेर-बेर भारतकेँ घुड़की दैत अछि।

39. **खगजाने खगहिक भाषा** (दू लोकक बीचक गप बूझब तेसरक लेल असम्भव होयब)-भारत आ रूसक मध्यक व्यवहार खगजानहि खगहिक भाषा समान होइत अछि।

28. **एक म्यानमे दू तरुआरि** (एकठाम दू दबंग लोकक हएब)–सासु–पुतोहु दुनूकेँ एकठाम रहब एक म्यानमे दू तरुआरि सदृश अछि।

29. **एक हाथे थपड़ी नहि बजैछ** (एसकर कोनो काज नहि होइछ)–गाममे सभकेँ मिला कऽ राखू, एक हाथे थपड़ी नहि बजैत छैक।

30. **एक हाथक ककड़ी नौ हाथक बीआ** (चिड़ैसँ चिड़ैक बच्चे उड़ाँत)–हुमायूँक लेल अकबर एक हाथक ककड़ी नौ हाथक बीआ सिद्ध भेल।

31. **ओझा लेखे गाम बताह, गाम लेखे ओझा बताह** (एक–दोसरक गपकेँ परस्पर बुझबामे असमर्थ होयब)–गाममे अंग्रेजिया बाबूकेँ ओझा लेखे गाम बताह, गाम लेखे ओझा बताह बुझाइत छलनि।

32. **कतए राजा भोज कतए भोजुआ तेली** (कोनो तुलने नहि)–राम आ श्याममे राजा भोज आ भोजुआ तेली बला संबंध छलैक।

33. **कानी गायक भिन्ने बथान** (समूहमेँ भिन्न विचारक लोक)–सभ रानीक मध्य कैकेयीक विचार कानी गायक भिन्ने बथान सदृश छल।

34. **कारी अक्षर भैंस बराबरि** (निरक्षर)–स्कूल गेलासँ की हयत, अहाँ तँ कारी अक्षर भैंस बराबर छी।

35. **कानऽ क मोन तऽ, आँखिमे गरल खूट्टी** (बहाना करब)–काज करबाक अछि तँ करू, अनेरे कानऽक मोन भेल तँ आँखिमे गरल खुट्टी बला बात नहि करू।

36. **कुकुरकेँ कतौ घी पचल** (नीक चीज नीक नहि लागब)–आजुक विपक्षी दलकेँ सरकारक नीको काज कुकुरक घी पचल सदृश होइत अछि।

37. **बिलाड़िक भागे सीक टूटल** (एकाएक अप्रत्याशित लाभ होयब)–मिथिलामे बाढ़ि अयला पर राहत वितरणमे अधिकारी सभक लेल बिलाड़िक भागे सीक टूटब होइत अछि।

38. **काँच बाँसक मुंगरी** (वास्तविकताक अभाव)–भारतक समक्ष पाकिस्तान काँच बाँसक मुंगरी अछि मुदा ओ बेर–बेर भारतकेँ घुड़की दैत अछि।

39. **खगजाने खगहिक भाषा** (दू लोकक बीचक गप बूझब तेसरक लेल असम्भव होयब)–भारत आ रूसक मध्यक व्यवहार खगजानहि खगहिक भाषा समान होइत अछि।

40. **खुट्टा बलें पड़रू चुकरए** (शक्ति सम्पन्नक बलें अपनाकेँ शक्तिशाली बूझब)-गाम घरक छोट भैया नेता सभक व्यवहार खुट्टा बलें पड़रू चुकरए होइत अछि।

41. **खसने नहि लजाइ, हँसने लजाइ** (गलतीसँ नहि आलोचनासँ डरब)-व्यापारमे घाटा लगला पर सियाराम मौन भय गेलाह ओहि पर हुनक मित्रगण कहलनि-साहस कय फेर व्यापारमे लागह किएक तँ ई सत्य जे खसने नहि हँसने लजाइ।

42. **खेत चरय गदहा मारल जाय जोलहा** (दोष ककरो आ दण्डित हो केओ)- चोरि कयलक खखना आ बान्हल गेल मखना। एकरे कहै छै-खेत खाय गदहा, मारल जाय जोलहा।

43. **गाय गोआर मिलान तँ ठेहुन पानि दुहान** (दू लोकक मेलसँ तेसरकेँ ठकल जायब)- रमाकान्त आ उमाकान्तमे तेहन ने मेल अछि जे हुनका दुनूक रहस्यक पार पायब सर्वथा असम्भव, मुदा धनु हुनका दुनूक फेरामे उल्लू बनि गेलाह। ओ ई नहि बुझैत छलाह जे गाय गोआर मिलान तँ ठेहुन पानि दुहान।

44. **गाय नहि तँ बड़द दूही** (असम्भव कार्य) रमणजीकेँ बसबाड़ि नहि छनि मुदा हुनका सँ मंच निर्माण हेतु पाँचटा बाँस माँगल गेलनि तऽ ओ बजलाह- हम बाँस कतय सँ देब? गाय नहि अछि तँ बड़दकेँ दूही।

45. **गुरू गूड़ चेला चिन्नी** (गुणमे बड़सँ छोटक बढ़ब)-शम्भू स्वयं बड शठ मुदा हुनक पुत्र तँ हुनको जितने छनि। ठीके कहल गेलैक अछि-गुरू गुड़ चेला चिन्नी।

46. **घर दही तँ बाहरो दही** (अपन लोकक बीच सम्मान तँ बाहरो सम्मान होइछ)-विद्यापतिकेँ मिथिलेमे नहि देशे-विदेशे मे प्रतिष्ठा छनि एकरे कहै छै-घर दही तँ बाहरो दही।

47. **घरक भेदिया लंका डाह** (आपसी फूट बेस हानीकार होइछ) आपसी झगड़ाक कारण जयचन्द्र मुहम्मद गौरीकेँ बजौलनि जाहि सँ अपने तऽ गेबे कयलाह हिन्दू राज्यो नष्ट भऽ गेल। एकरे कहै छै-घरक भेदिया लंका डाह।

48. **चटमंगनी पट बिआह** (अतिशीघ्र काज होयब) जनकजी एकहि दिनमे खढ़, बाँस, आ मजदूरक जोगार कय घर ठाढ़ कऽ लेलनि। एकरे कहै छै चट मंगनी, पट बिआह।

49. **चलनी दूसय सूपकेँ जिनका सहस्र गोट छेद** (दोषी रहितहुँ अनका दुसब) रजनीश स्वयं सब अवगुणक आगर छथि मुदा दूसैत छथि दिनेशकेँ। ठीके कहल गेल अछि-चलनी दूसय सूपकेँ जिनका सहस्र गोट छेद।

50. **छुछुन्नरि माथमे चमेलीक तेल** (अयोग्य लोककेँ नीक वस्तुक लाभ) कहुना अपन जीवन बीतौनिहार कर्मूकेँ एकदिन मोटर साइकिल पर सजि-धजिकऽ बहराइत देखि गोविन्द बाजल-छुछुन्नरिक माथमे चमेलीक तेल चरितार्थ भऽ गेल।

51. **जकर लाठी तकर भैंस** (शक्तिक बलें अनर्थ करब) धनञ्जय लाठीक बलपर झिंगुरक सामनहि ओकर खेत जोति लेलकनि। एहिपर संजय बाजल ठीके कहै छै जकर लाठी तकर भैंस।

□□□